देवकीनंदन शुक्ल के कथा साहित्य में यथार्थ बोध

प्रा. गंगाधर बालन्ना उषमवार
श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय,
माजलगांव जि.बीड

डॉ.एस.एल. मुनेश्वर
असोसिएट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक
हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र
पीपल्स कॉलेज, नांदेड

हिंदी साहित्य यह भारतीय समाज का आईना है। हिंदी साहित्य में भारतीय समाज का यथार्थवादी चित्रण हिंदी साहित्यकारों ने किया है। इसी साहित्याकारों में देवकीनंदन शुक्लजी है। इन्होने अपने साहित्य में समाज का यथार्थवादी चित्रण किया है। शुक्लजी का जन्म ८ जून १९४५ ई मे गोबरॉय, बाया नाथनगर, जिला—भागलपुर (बिहार) में हुआ। इन्होने पटना विश्वविद्यलय से सन १९६७ ई में प्रथम श्रेणी से राजनीति विज्ञान में एम.ए.। फ्रेंच का अध्यायन स्वतंत्ररुप से। फ्रेंच और अॅगरेजी साहित्य में भी अभिरुची। इनकी रचनाओं में उपन्यास कहानी और लधुकथा संग्रह आदि पर इन्होने लेखनी चलायी। उपन्यास 'पंथ और परिणति', ' ऑसु बने संगीत ' तथा प्रोफेसर सुस्मिता यह तीन उपन्यास प्रमुख है। कहानी संग्रह में 'नई रोशनी' और 'त्रिभुवन लाल यमलोक यात्रा' यह दो कहानी संग्रह है और एक लघुकथा संग्रह 'शनिचरा की पुण्यतिथी' आदि रचनाएँ प्रमुख है। ' पंथ और परिणति' यह देवकिनंदन शुक्लजी का प्रथम उपन्यास के रुप में पाठको के सामने प्रस्तुत हुआ। इस

उपन्यास का मुल संदेश पंथ और परिणति के बीच अन्योन्याग्रय संबंध को रेखांकित करना है। पंथ और परिणति का

निर्धारक है।सन्मार्ग पर चलकर ही कोई व्यक्ति उच्च ध्येय की

प्राप्ती कर सकता है। दुसरों की बुराई करनलेवाला भुल भटककर अपना ही व्यक्तित्व खो

बैठता है। लेखक ने आंचलिक परिवेश के सुरेश बाबु जैसे दृष्ट चरित्र और
देवदत्त जैसे निर्दोष चरित्र का निर्माण कर इस सत्य को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। शुक्लजी ने अपने उपन्यास प्रो.सुस्मिता के प्राक्कथन में कहा है— '' युग बोध किसी युग विशष के राजनीतिक, समाजिक, धार्मिक और वैज्ञानिक परिवर्तनो का संपुर्ण परिणाम, सर्वोत्कृष्ठ संग्रह है। अंत: साहित्य का ऐतिहासिक पक्ष, सौन्दर्य के दृष्टिकोण से भले हीवह लघु अथवा महत्वहीन हो की अनदेखी नही की जा सकती। हर शब्द को उन्नती—उवनति, आशा—निराशा, संशय—संघर्ष, आस्था—अविश्वास जैसी अवस्थाओं से गुजरना पडता है। हर साहित्यकार की अभिव्यक्ति का ढंग उसकी लघुता या महानता के कारण भिन्न हो सकता है लेकिन उस युग की प्रमुख प्रवृत्तीयॉ उसकी कृतिओ में अवश्य परिलक्षित होगी अत: साहित्य युग चेतना की प्रतिछाया होती है।'' १ इसी बातों पर अमल करते हुए शुक्लजी ने अपने साहित्य में यथार्थ बोध को भी अंकित किया है।?

शुक्लजी ने 'पंथ और परिणति' उपन्यास में सामाजिक जीवन यथार्थ को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में पारिवारिक जीवन का यथार्थ के रुप में चित्रण हुआ है। मानव की प्रारंभिक तथा मूलभूत आवश्यकताओं की पुर्ति करने वाले संगठन एव संस्थाओ में परिवार का स्थान सबसे उच्चा और प्रथम माना जाता है। व्यक्ति का सर्व प्रथम साक्षातकार अपने परिवार से ही होता है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए सब से महत्वपुर्ण है। पंथ और परिणती में परिवार के संघर्ष करने यमुना पांण्डे काजीवन चित्रण किया है। वह अपने संयुक्त परिवार में अपनी मॉ, पत्नी और छोटे भाई के साथ रहता है। वह आपने छोटे भाई के पढाई के लिए त्याग, साधना और भीषण संघर्ष करते दिखाई देता है वह इस संदर्भ से स्पष्ट होता है— ''तुम मेरे इस अंधकारपुर्ण जीवन में आशा की एक किरण हो

भाई। अगर तुम न होते हो शायद आज में जीवित न होता। इस क्रुर समाज के उपमानजनक व्यवहार को जो मैने आज ते सहन किया है वा सिर्फ तुम्हारे लिए इस प्रखर धार में मेरी डोलती हुई जीवन नैया को सिर्फ तुमने संभाला है। मैं तुम्हारा उपकार कैसे भुल सकता हुँ। किंतु मैं तुंम्हारा बडा भाई भी है। इस नाते मैं तुम्हें तहे दिल से आशीर्वाद देता हुँ कि तुम जीवन में सफल के उच्चतम शिखर पर पहुँचे।''२

इस तहर शुक्लजी ने परिवारिक जीवन यथार्थ को प्रक्कत किया है। तो साथ ही इन्होने अनेक समस्थाओं का यथार्थ रुप से चित्रा किया है। दहेज प्रथा का यथार्थ भी इन्होने अपने उपन्यास, कहानियों में प्रस्तुत किया है। दहेज प्रथा हमारे समाज में एक विकराल रुपधारण कर चुकी है। समाज में अपने पैर मजबुती से गडए हुई है। इसी दहेज के कारण लडकियों की शादी एक बडी समस्या बनी है। इसी दहेजी भयानक स्थिती का चित्रण देवकिनंदन शुक्ल के उपन्यासो में अभिव्यक्त किया है। पंथ और परिणति में यमुना पांडे अपने छोटे भाई सुरेश का विवाह तय करते दहेज पर बाद करते है और दहेज मांग करते है और वधु पक्ष भी इनकी मॉग के स्विकार करके उन्हे दहेज देने का स्वीकार करते है '' यमुना पांडे ने दो हजार कहा। बनोई और साले की गणपती चौधरी ने एक हजार कहा। बहनोई और साले पर सौदा तय हुआ लडके ने अपने लिए खादी के सुट,पैट,धोती कमीज और उनी बडी मांग की जिसे गणपति चौधरी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।''३

शुक्लजी ने अपने उपन्यास साहित्य में सामाजिक यथार्थ के साथ साथ राजनैतिक यथार्थ को भी प्रस्तुत किया है। शुक्लजीने राजनीति के प्रमुख आधार स्तंभ माने जिनेवाले युवा नेता और छात्र यह दोनों राजनीती में अपनी भुमिका अत्यंत संक्रिय और प्रभवात्मक रुप से निभाते है। मंत्री और राजनेता इनकी शक्ति को जानते है। और इस शक्ति का उपभोग वह राजनेता अपने स्वार्थ के लिए किया करते है। आज भी वह इस शक्ति का उपभोग अपनी राजनैतिक मंत्री को पुरा करने के लिए उपभोग में लाते है। इन युवा नेता तथा छात्रों का चुनाव और चुनावी सभाओं में प्रचार और प्रसार करने में उपभोग करते है। युवा नेता का इस्तेमाल मंत्री तथा राजनेता आपने मतलब के लिए करते है और उन्हे अपने बराबर आने नही देते वही उसी जगह पर उन्हे रखते है। राजनीती में आगे बढने नही देते इसी का चित्रण 'ऑसु बने संगीत' इस उपन्यास में शुक्लजी ने किया है ''हॉ एक बात पुछना तो मै भुल ही गया। वे युवा नेता कौन—कौन और कितने है ?''

'' मै उनके नाम नही जानता हुँ, लेकीन वे बडे जुआरु मालुम पडते है। उनकी संख्या चार है।

'' उन्हे भी कुछ देकर मुँह बंद कर दीजिए। अभी अपना काम निकालना है''। '' कितना? ''

''जो भी दीजिए लेकिन किसी को भी पॉच सौ से अधिक नही देना है, नही तो उन लोगो का मन बढ जाएगा।'' ४

देवकीनंदन शुक्लजी ने सांप्रदायिक दंगो का यथार्थ चित्रण भी अपने साहित्य में किया है। स्वातंत्र प्राप्ती के बाद भी यह सांप्रदायिक दंगे आज भी हमारे देश में हो रहे कभी मंदिर, मस्जिद तो कभी दो जातियो में तो कभी मुर्तिया तोडने पर आदि बातो को लेकर समाज में निरंतर साम्प्रदायिक दंगे होते दिखाई दे रहे है। इसी वास्वविकता का चित्रण देवकीनंदन शुक्ल जी ने किया है। इनके पंथ और परिणति उपन्यास में देवकिनंद शुक्ल नी ने शहर में हिस्सा फैल गई थी इसी का वस्तुस्थिती चित्रण किया है '' लेकिन यह क्या? यहॉ नया अवरोध उत्पंन्न हो गया था।

सडक नाम थी। सैकडो नवयुवक टायर, मोटर साइकिल, पेडो की डालियो को वीच सडक पर रखकर वाहनो के आवागमन को एक घटे से रोके हुए थे। ये सब दो गुटों के बीच आपसी संघर्ष में हयूरेबाजी से एक छत्र की मौत पर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे।''५ आज भी महाविद्यालय, स्कूल और सार्वजनिक जगाहें पर इस तरह दो वर्गो में दो गुटों में मार—पिट तथा हिंसा की वारदाते होती हमे दिखाई देती है।

शुक्लजी का कहानी संग्रह 'नई रोशनी' यह अत्यंत महत्वपुर्ण कहानी संग्रह माना जाता है। नई रोशनी' यह प्रथम कहानी का शीर्षक है जो इस कहानी संग्रह को दिया है। इसमें प्रथम कहानी में एक पढी लिखी लडकी एक निम्न जाति के

कॉलेज सहपाठी से विवाह कर रुढीवादी एवं सामती रेग में डुबे हुए माता–पिता को सामाजिक परिवार्तन के साथ चलने का संदेश देती है। इस कहानी के माध्यम से शुक्लजीने आज के युवाओं की यथार्थवादी दृष्टीकोण को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। शुक्लजीने आज के युवको के प्रेम संबंधों तथा अंतर्जातिय विवाह का यथार्थ का प्रस्तुत किया है यु कहे तो आज की युवा पिढी प्रेम का अर्थ जिस रुप मे लेती है इसका चित्रण किया है और साथ ही अंतर्जातीय विवाह की शुरुवात भी प्रेम के माध्यम से ही हुई है। इसका भी चित्रण शुक्लजीने किया है। रोशनी और शलेन्द्र दोनों ही एक दुसरे से प्रेम करते है और प्रेम विवाह करने की इच्छा रखते है शैलेंद्र रोशनी को कहता है कि उच्च जाति के होने की वजह से उसके पिता नही मानेगें वैसी स्थिती में किसी मंदिर में धार्मिक रीती से विवाह कर लेगे। प्रेम विवाह करने वाले बंजरे का जीवन बिताना पडता है। समाज मे उन प्रेमी विवाहितो का कोई स्थन ही नही रहता है। इस सच्चाईका चित्रण किया गया है–''बहुत अधिक संभावना है कि उच्च जाति का होने के कारण तुम्हारे पिता नही मानेगे। वैसी स्थीती में मै तुम्हें पटना ले आऊगा। मेरे माता–पिता को खुशी होगी। प्रेम–विवाह के बाद प्राय: प्रत्येक जोडी को बंजरे का जीवन बिताना पडता है। उसका समाज में कोई स्थान नही रह जाता।''६ आज के समय में भ्रष्टाचार और घोटाले यह बाब नई नही रही है। आज प्रत्येक कार्यालयों में भ्रष्टचार एक शिष्टाचार बन गया है। भ्रष्टाचार यह कार्यालयो तक ही सिमित नही है यह राजनेता प्रशासनिक उच्चपदाधिकारी न्याय व्यवस्था जहॉ न्यायदान का अर्थ होता है वहॉ तक अपनी जडे फैला चुका है। देवकीनंदन शुक्लजी स्वयं एक प्रशासनिक अधिकारी रह चुके है। वह इस भ्रष्टाचार की एस व्यवस्था का विरोध कर अपने साहित्य में इसकी अभिव्यक्ति प्रखर रुप से प्रस्तुत की है। शुक्लजी ने अपनी कहानी एक एडी.एम की त्रासदी में सन १९८० के जो उच्चधिकारीयो की महत्वकांक्षा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है वे करते है कि उन दिनों जो भ्रष्टाचार है वह निम्न श्रेणी के कर्मचारीओ की मजबुरी थी लेकिन उच्चपदाधिकारीयों में युवक रातो–रात करोडपति बनने के इरादे से ही लोकसेवा आयोग मार्फत आते थे। वह भरी रातो–रात करोडपती बनने के इरादे को स्पष्ट करते दिखाई देता है ''सन १९८० का दशक आते आते समय तेजी से बदलने लगा था। भ्रष्टाचार, जो अब तक निम्न श्रेणी के कर्मचारियों की मजबुरी था। अब उच्यपदाधिकारीयों का व्यसन बन रहा था। संघ लोकसेवा आयोगा ने तकनीकी स्नातको के लिए भी आई.ए.एस जैसे सर्वोच्य नागरिक सेवाओं में प्रवेश के व्दार खोल दिए ये अब अधिक से अधिक महत्वकांक्षी युवक रातो–रात करोडपती बनने के इरादे से इस सेवा में आने वाले। इस धनलोलूपता ने कन्हे राजनेताओं से साठ गाठ करणे की प्रेरणा दी थी।''७

देवकीनंदन शुक्लजीने अपने साहित्य मे यथार्थ बोध को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक रुप में प्रस्तुत किया है। इसी में इन्होने भ्रष्टाचार, विधवा विवाह, दहेज, राजनैति, सांप्रदायिक दंगे, पुलिस प्रशासन, आदि समस्याओं को वास्तविक रुप से इन्होने प्रक्कत कर समाज में चल रहे सभी परंपराओं का भी इन्होने यथार्थ रुप से चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१) प्रोफेसर सुस्मिता – देवकीनंदन शुक्ल, पृ.क्र. १२
२) पंथ और परिणति –देवकीनंदन शुक्ल, पृ.क्र. ०३
३) पंथ और परिणति –देवकीनंदन शुक्ल, पृ.क्र. ०९
४) ऑसू बने संगीत –देवकीनंदन शुक्ल, पृ.क्र.६१
५) पंथ और परिणति–देवकीनंदन शुक्ल, पृ.क्र. १७२
६) नई रोशनी कहानी संग्रह –देवकीनंदन शुक्ल, पृ.क्र.१८
७) त्रिभुवनलाल की यमलोक यात्रा –देवकीनंदन शुक्ल, पृ.क्र.२